द्रव्यसहायक पुण्यात्माओं के नाम

२५) सेठ शादीराम जी गोकुलचन्द जी जौंहरी
दिल्ली नवघरा

१०) सेठ नवलकिशोर जी खैरातीलाल जी
जौंहरी दिल्ली

१०) दलेलसिंह टीकमचन्द

३) नानकचन्द जी दूगड़

२) रामजीदास जी दूगड़

उत्तराध्ययनसूत्रस्य विषयानुक्रमणिका

प्रस्तावना ।

जैनियों में श्वेताम्बर दिगम्बर दो विभाग है उन में श्वेतांबर की संख्या ज्यादा गुजरात में है जिस से सब सूत्रों का बालाबोध गुजराती भाषा में हो चुका है परन्तु हिन्द में हिन्दी भाषा सर्वमान्य होने के कितनेक कारण देख कर वीतरागप्रणीत सूत्रों का रहस्य आम लोगों को फायदा पहुंचावें इस हेतु से उत्तराध्ययन सूत्रसार दो विभागों में छपाया जाता है जो निरन्तर सूत्र श्रवण नहीं कर सकते वा इतना समय नहीं निकाल सकते वा जो अल्पबुद्धि वाले साधु साध्वी हैं उनको इससे बहुत फायदा पहुंचेगा और भविष्य में विशेष सहाय मिलने पर सम्पूर्ण मूल भाषान्तर और संस्कृतटीका के साथ भी छपेगा । इस लिये विद्याप्रेमी कोई भी दिगम्बर श्वेताम्बर साधमार्गी मदद देने को इच्छा करें वो मण्डल के अधिकारी को लिखें जहां तक बनेगा वहां तक कटु परस्परद्वेषक वैर वृद्धि कारक शब्दों को यहां पर जगा नहीं मिलेगी क्योंकि वीतराग प्रभु के वचन से वक्ता श्रोताओं को रागद्वेष दूर होना चाहिये और अपूर्व शांति मिलनी चाहिये अन्त में मोक्ष की सिद्धि है ।

———*———

उत्तराध्ययन सूत्र में क्या है ?

भारतवर्ष में अनेक महात्मा पुरुष हुए हैं उन को इस देश में अवतार मानते हैं जैन सम्प्रदाय में उसको तीर्थंकर कहते हैं जैन धर्म में चरम याने आखीर तीर्थंकर महावीर प्रभु हुए हैं उन्होंने अन्तिम समय पर उत्तराध्ययन सूत्र सुनाया था ऐसी मान्यता है और वा सूत्र के अन्त में वह गाथा भी है:—

इअपाउकरेबुद्धे नायए परिनिव्वुए ।
छत्तीस उत्तरज्झाए भवसिद्धिए सम्मए ॥

(तिबेमि)

सुधर्मा स्वामी जंबु स्वामी (जो उन के शिष्य हैं) उन को कहते हैं कि शीघ्र मोक्ष में जाने वाले भव्यात्माओं के हितार्थ उत्तराध्ययन सूत्र के छत्तीस अध्ययनों को प्रकट श्रोताओं को सुना कर ज्ञात वंश उत्पन्न श्री महावीर तीर्थंकर मोक्ष में गये कल्प सूत्र वगैरह से भी वह ही ज्ञात होता है ।

साधु दीक्षा ले कर स्व और परोपकार कर सके इस

लिये उसको अनुक्रम से सिद्धान्त पढ़ाते हैं दशवैकालिक सूत्र आवश्यक सूत्र पढ़ा कर पढ़ाते हैं पीछे उत्तराध्ययन पढ़ाते हैं।

साधु का विशेष आचार उस में होने पर भी ग्रहस्थों को उस से वहुत हित शिक्षायें मिलती हैं, इस लिये ग्रहस्थी भी उस को गुरु मुख से सुनते हैं "हरमन जेकोवी" महाशय ने उस की उत्तमता देख कर उस का अंग्रेजी में भाषान्तर किया है मागधी में मूल गाथायें होने से आधुनिक मंद वुद्धि वालों को वह कोई २ समय अतीव कठिन हो जाने से उस की उपयोगिता देखकर विद्वान् साधुओं ने सरल और विद्वत्ता से भरी हुई कठिन टीकायें भी की हैं। उस का गुजराती भाषान्तर हो चुका है और मूल मूल का अर्थ भी अलग छपा है और धनपत सिंह वहादुर ने मूल लक्ष्मी वल्लभी सरल टीका (दीपिका) और गुजराती अर्थ और कथाओं के साथ छपाया है एक हिंदी विद्वान् ने उसका हिंदी भाषान्तर भी शुरू किया है उस उत्तराध्ययन का कुछ संक्षिप्त रहस्य यहां कहेंगे।

विद्या प्रेमी गुण शोधक ऐक्यता चाहक भारतवासी हिंदी जानने वाले इस छोटे से ट्रेक्ट को गौर से पढ़ कर

हिंदी सरल भाषान्तर किंवा संस्कृत टीका के साथ मूल गाथायें पढ़ें और स्मरणीय गाथायें अर्थ समझ कर हिव्ज करें यानी मौखिक सीखें।

शिष्य और विनय।

विद्योपार्जन के तीन उपाय नीति शास्त्र में कहे हैं (१) विनय यानी नम्रता अथवा सेवा कर के पढ़े। (२) अथवा इच्छित धन देवे। (३) अथवा विद्या दे कर दूसरी विद्या पढ़े शिष्यों के पास केवल पहिला ही उपाय है इसलिये उस में नम्रता गुण होना चाहिये गुरु को वन्दन कर प्रसन्न कर सूत्र पढ़े तो विद्या अच्छी आवेगी। जैसे साधु को यह कहा है ऐसे ही पाठशालाओं के विद्यार्थिओं को भी विनय सीखना चाहिये जो विनय न सीखेंगे तो विद्या सफल नहीं होगी।

उत्तराध्ययन सूत्र।

गाथा (१)

संजोगा विप्पमुक्कस्स अणगारस्स भिक्खुणो।
विणयं पाउकरिस्सामि आणुपुव्वि सुणेह मे॥

महावीर प्रभु के पास सुधर्मा स्वामी ने पहिले सुना

वह सुधर्मा स्वामी अपने शिष्य को कहते हैं कि मैंने जो महावीर प्रभु के पास सुना है कि वो शिष्य हितार्थ में विनय का स्वरूप कहूंगा जो सांसारिक माता, पिता, धन, स्त्री वग़ैरह छोड़ कर घर से निर्ममत्व हो कर भिक्षा से निर्वाह करने वाले भव्यात्मा हैं उन शिष्यों को अतीव अतीव लाभदायी है वह आप सुनें—

गुरु के पास पढ़ने वाला शिष्य अप्रमादी, निष्कपटी, प्रज्ञ विचक्षण होना चाहिये और गुरु के कहने से तो काम करे किंतु विना कहे उन की चेष्टा से भी जान लेवे कि गुरु महाराज वह चाहते हैं और वह जान कर शीघ्र गुरु महाराज के विना कहे कार्य कर लेवे वह विनीत शिष्य यानी विनय करने वाला शिष्य है।

आणा निद्देसकरे, गुरुणमुववाय कारए।
इंगियागार संपन्ने, से विणीएत्ति उच्चई॥

गुरु के नज़दीक बैठ कर उन की इच्छानुसार आज्ञा (हुकम) का पालन करे, और उन की शरीर चेष्टा समझ कर विना कहे भी कार्य कर देवे ऐसी निपुण बुद्धि वाला सुशिष्य विनीत कहा जाता है।

वह लक्षण जिस में न हों वह अविनीत कहा जाता है।

आणानिद्देसकरे, गुरुणमनुवायकारए ।
पडिणीए असंवुद्धे, अविणीएत्ति वुच्चई ॥

गुरु का कहना सुनने में न आवे इसलिये दूर जाकर बैठे और सुन कर भी मन में शत्रु भाव रखे और चेष्टा से न समझे वह अविनीत कुशिष्य है ।

कुशिष्य को अनेक दूसरे गुण होने पर भी मोक्ष देने वाले नहीं होते इसलिए कूलवालुक तपस्वी की कथा है ।

एक आचार्य का कुशिष्य गुरु को निरंतर शत्रु रूप मानता था. एक पहाड़ पर दोनों प्रभु के दर्शनार्थ जिन मन्दिर में गये थे लौटने के समय पीछे से शिष्य ने गुरु को मारने को पत्थर धकेल दिया गुरु महाराज ने पांव चौड़े कर पत्थर को निकाल दिया और कहा कि रे अविनीत शिष्य तेरे दुष्ट कर्मों का फल अब तेरे को इस भव में मिलेगा संयम से भ्रष्ट होकर एक स्त्री के फँदे में फँसकर दुराचारी होकर दुर्गति में जावेगा भय भीत होकर शिष्य भागा और जहां स्त्रियों का बिलकुल आवागमन न हो वहां जँगल में नदी के किनारे तपस्या करने लगा नदी भी उसकी तपस्या के प्रभाव से दूसरी तरफ़ बहने लगी

और लोग उसका चमत्कार देखकर "कुलवालुक" तपस्वी नाम से बुलाने लगे।

अशोकचन्द्र [कूणिक] जो श्रेणिक राजा का पुत्र था वह अपने भाइयों के पास हाथी वगैरह लेने को गया और भाइयोंको आज्ञा देने वाले चेटक महाराज के साथ लड़ा किन्तु लड़ाई में हार चेटक वैशाली नगरी के भीतर रहा अशोकचंद्र बाहर रहा थक गया।

आराधित देवता ने कहा कि शहर में मुनि सुव्रत स्वामीका स्तूभ [मंदिर] है वह कुल वालक तपस्वा के कपट से टूटेगा और मागधिका वेश्या से तपस्वी शहर में आवेगा राजा ने वह सब काम किया वेश्या उस को भक्ति के बहाने में रेचक वस्तु खिला कर अशक्त बनाकर सेवा के कथनानुसार को पतित कर साथ ले आई उस ने वेश्या के कहने मूजिब शहर के लोगों को धोका दिया कि यह स्तूभ है वहां तक अशोकचन्द्र का घेरा नहीं उठेगा भोले लोगों ने तपस्वी का कहना मान कर कष्ट दूर करने को वही किया और अशोकचन्द्र थोड़ा लौट एक दम अन्दर आया लोग बिचारे बड़े दुःखी हुए और अशोकचँद्र की इच्छापूर्ण हुई परन्तु वह कुलवालुक वेश्या के फँदे में फंसकर तपस्या चारित्र और

बुद्धि से भ्रष्ट होकर दुर्गति में गया जगत् के सब मनुष्यों को इस दृष्टांत से यह शिक्षा लेनी चाहिये कि अपने गुरु माता पिता सासू श्वसुर पति का राजा का सेठ का राज्य अमलदारों की आज्ञा पालन करनी उनका बहुत सन्मान करना जिस से इस लोक में इज्जत बढ़ेगी धन सँपदा मिलेगी सुगति मिलेगी नहीं तो कुल बालुक माफिक दुःख पावेगा।

ऐसे अनेक हित शिक्षा रूप दृष्टांत देकर शिष्यों को सद्गुणी बनाने का प्रथम अध्ययन में रहस्य है, अंत की गाथा यह है कि :—

सदेव गंधव्वमणुस्स पूइए चइतु देहं मलपंक पुव्वयँ ।
सिद्धे वा हवइ सासए देवेवा अप्परएमहिड्ढिए ४७

गुरु की आज्ञा पालक कहना मानने वाला सुशिष्य इस लोक में देव गांधर्व मनुष्यों से स्तुति कराता हुआ पूज्य होकर गन्दी देह जो मल दुर्गंधी से भरी है उस को छोड़कर मोक्ष में जावेगा जन्ममरण रहित होवेगा अथवा बहुत रिद्धि वाला थोड़ा मोहवाला तेजस्वी देव होगा वह तीसरे भव में मोक्ष में जा सकता है।

एक अध्ययन में इतना विस्तार से कहकर अब सं-
क्षिप्त से ही कहेंगे

दूसरा परिषह अध्ययन

जो विनीत शिष्य है उस का पुण्य बढ़ने से उसकी बहुत मान्यता होती है तो अनुकूल पदार्थ मिलते हैं जिस से अहंकार होता है रक्तता होती है।

वह भी तोता की मुआफिक बँधन है और जो पूर्व में पाप किये हैं वो भोगने का समय आने से विपरीत भयंकर दुःख दायी संयोग होता है, तो सुशील शिष्य अच्छे पदार्थों से फस न जावे न विपरीत से साधुपन. छोड़ देवे न क्रोध कर दूसरों को पीड़े इस लिये यहां पर २२ परिषह का वर्णन करते हैं।

(१) दिगिछा (खुवा) (क्षुधा) भूख परिषह (२) पिवासा (तृषा) परिषह (३) सीय (शीत) (४) उसिण (उष्णता) (५) दंस मसग (डांस मच्छर) का उपद्रव (६) अचेल (वस्त्र जीर्णता) (७) अरइ (अरति) (८) इत्थी (स्त्री) परिषह (९) चरिया (पैदल चलना) परिषह (१०) निसीहिया (एक जगह कल्पानुसार रहना) पार-

षह (११) सिज्जा (शय्या) परिषह (१२) अक्कोस (आक्रोश) परिषह (१३) वह (वध) परिषह (१४) जायणा (याचना) परिषह (१५) अलाभ (१६) रोगपरिषह (१७) तणफास (तृणस्पर्श) परिषह (१८) जल (मल) परिषह (१९) सक्कार पुरक्कार (सत्कार पुरष्कार) परिषह (२०) पन्ना (प्रज्ञा) परिषह (२१) अन्नाण अज्ञान परिषह (२२) दंसण दर्शन श्रद्धापरिषह--

इस २२ परिषह याने कष्ट साधुओं को आवे तो वह पुण्यात्मा धैर्यता धारण कर समता से सहन करे न हाय हाय करे न दीनता लावे न अत्याचार करे न अनाचार सेवे न दुराचार स्वीकार करे सिर्फ वही चिंतवन करे मैंने पूर्व में जो कृत्य किये थे उसका फल भोग रहा हूं इस लोक में भी जो कृत्य किये हैं उनके योग्य दंड किंवा सन्मान राजा देता है तो जो अनर्थ अत्याचार पूर्व में किया है वो विना भोगे कैसे छूटेगा ? और जो अनुकूल चीज़ मिले तो अहङ्कार न करे न उस में रक्त होवे न दूसरों को सतावे न चारित्र धर्म से पतित होवे इसलिए दूसरे अध्ययन के अन्त में यह गाथा है कि--

एए परी सहासव्वे कासवेण पवेइआ ।
जे भिक्खु न विहन्नेज्जा पुट्ठो केणइ कण्हुइ ॥

इतिबेमि. २

ऊपर कहे हुए २२ परिषह काश्यपगोत्रिय महावीर प्रभु ने सुनाया वे कोई भी साधु को कोई भी जगह कोई भी परिषह आजावे तो साधु धैर्य धारण कर समता से सहन करे साधुता से भ्रष्ट न होवे ऐसा सुधर्मा स्वामी जम्बु स्वामी को कहते हैं-

गृहस्थों को इस अध्ययन से यह हित शिक्षा है कि जब सुख आवे तो अहंकार न करना दुःख आवे तो रोने को न बैठे न दीनता लावे न सदाचार छोड़े तो वह इस लोक में सुख पावेगा सीता, द्रोपदी, हरिश्चन्द्र दमयन्ती राम, पांडव को दुःख आया वो सहन किया तो आज तक उनकी कीर्ति है और दुर्योधन रावण वगैरह ने अहंकार किया तो बेइज्जती और दुःख पाया है सो याद कर सज्ज-नता धारण कर सुख दुःख दोनों सन्तोष से भोगना चाहिये।

अध्ययन ३

तीसरे अध्ययन में मनुष्य जीवन की अमूल्यता

बता कर कहते हैं कि संसार जो दुःखों का समुद्र है उस में कोई महापुण्य के उदय से उत्तम सामग्री प्राप्त हुई है तो उसका सदुपयोग कर संसार के दुःखों से मुक्त हो जाओ-

उस अध्ययन की १ ली गाथा।

चत्तारिपरमंगाणि दुल्लहाणीह जंतुणो ।
माणु सत्तं सुई सद्धा संजमं मिय वीरियं ॥

(१) मनुष्य जन्म (२) सद्गुरु का बोध का श्रवण [सुनना] (३) उस के वचन पर विश्वास और (४) संयम में अपनी शक्ति उपयोग में लेनीं ये चार वस्तुयें जीवों को बहुत कठिनता से प्राप्त होती हैं।

पशुत्व में जो दुःख और परवशता है वह सब जानते हैं दुष्ट मनुष्यों को जो कैद में दुःख है वह भी सब देखते हैं और सत्ताधारिओं में जो रात दिन इधर उधर घूमना और ऐश आरामी हैं लड़ाइयों का संकट है वह भी प्रत्यक्ष है ऐसे ही ज्ञानी प्रभु ने नर्क और स्वर्ग जो दुःख सुख के स्थान हैं वहां विना शांति धर्म श्रवण करने का बहुत दुर्लभ बताया है केवल एक मनुष्य जन्म में ही ऊंच गोत्र में जन्म लेने वाले को नीति से द्रव्योपार्जन करने वाले को महा पुण्य के उदय से परमार्थ वृत्ति की सद्बुद्धि होती है

हिंद में आज् जो परमार्थी पुरुष वर्त्तमानकाल में हुये हैं वे केवल दस वीस गिनती के हैं ऐसे ही सदाचार से साधुता धारण कर संतोष वृत्ति से जीवन गुज़ार सद्गुरु की सेवा से सद्बोध पाकर इंद्रियों को वश में रख कर स्व पर का भला कर निस्पृहता से जीवन गुजारेगा तो इस लोक में इज्जत और परलोक में सद्गति पावेगा हमारे भारतवर्ष के ५२ लाख बावा इस अध्ययन को पढ़ कर अपनी साधुता सफल करेंगे क्योंकि उन को मनुष्य जन्म सद्बोध धर्म श्रद्धा और ब्रह्मचारीत्व प्राप्त हुए हैं ऐसी योग्यता मिलने पर भी धर्म न स्वीकार करेंगे न परोपकार करेंगे तो कहां से सुख सद्गति मिलावेंगे किन्तु जो विद्याविहीन हैं उनको ऐसा ज्ञान देना वह सद्गृहस्थों का परम कर्त्तव्य है।

इस अध्ययन की अन्तिम नव गाथा में साधुता पालने वाले को फल सूचन करती है।

गाथा १२

सो ही उज्जुय भूयस्स धम्मो सुद्धस्सचिट्ठई।
निव्वाणं परमं जाइ घयं सितव्व पावए॥ १२

जो पुरुष निष्कपट होकर धर्मात्मा होकर शांति,

निर्लोभता, कोमलता और पवित्रता धारण कर रहेगा वह पुरुष घी डालने से जैसे अग्नि पवित्र और तेजस्वी होता है ऐसे वह साधु भी तेजस्वी रहेगा राजा महाराजा देव विद्वान् सब उस को पूजेंगे इज्ज़त करेंगे और मनुष्य आयु पूरा होने पर मुक्ति पावेगा यदि जो मोक्ष एकदम न मिले तो ८ गाथा में कहा है कि इस साधुता का फल देवलोक 'स्वर्ग' और उत्तम कुल में धर्मात्मा पुरुष के घर में पंचेंद्रिय पूर्ण अंग सुशोभित अनुकूल सुख मिलेगा और निस्पृहता मिलेगी इतना सुख पाकर फिर साधु होकर मुक्ति में जावेगा यहां पर इतना अवकाश न होने से आठ गाथा और अर्थ नहीं लिखते सिर्फ दो गाथायें लिखते हैं।

भोच्चा माणुस्सए भोए अप्पडिरूवे अहाउय ।
पुव्व विसुद्ध सद्धम्मे केवलं वोहि बुज्जिया ॥
चउरंगं दुलहं नच्चा संजमं पडिवज्झिया ।
तव साधुयकम्म से सिद्धे हवइसासये ॥

तिवे मि.

अर्थ ऊपर कह आये हैं।

तीसरे अध्ययन में मनुष्य जन्म आदि दुर्लभ वता कर चौथे अध्ययन में देह सम्पत्ति सत्ता सव अस्थिर है वह बताते हैं कि तुम उस नाशवन्त वस्तु के भरोसे पर मत वैठो।

अध्ययन ४ था

संसार में धर्म विना सब असार नाशवन्त हैं।

असंखयं जीविय] मापमाए।
जरोवणीयस्सहु नत्थी ताणं।
एवं वियाणा हि जणे पमत्ते।
कएणुविहिंसा अजया गहन्ति॥ गाथा १

मुमुक्षु यानी मोक्ष चाहने वाले पुरुष शिष्य अथवा गृहस्थ हैं उन को वीतराग देव फरमाते हैं कि हे भव्यात्माओं! आप की जीवन डोरी यानी आयुष असंस्कृत यानी कच्चे घड़े की माफ़िक नाशवन्त है ज़रा भी अकस्मात् हुआ तो सीसे के वरतन माफिक नाश हो जावेगा अथवा मिट्टी के कच्चे घड़े पर पानी पड़ने से जैसे नाश होता है ऐसे जीवन भी नाश होवेगा और जवानी में धर्म न करोगे तो बुढ़ापे में कोई रक्षक भी न होगा इसलिए प्रमाद न करो किन्तु युवावस्था में ही धर्म कर लो और काया नाशवन्त जानते हुए भी हिंसा कर के हिंसक लोग दूसरों को पीड़ा करने वाले धर्म से विमुख रह कर किस की शरण लेंगे ? और इन्द्रियों को वश में न रखेंगे उन का क्या हाल होगा ? इसइ लिये न्द्रियों को

वश में कर दूसरों को दुःख मत दो यह सब को समझना चाहिये जो नहीं समझेंगे तो दूसरी गाथा में कहा है कि वे वैर बांध कर नर्क में जाकर दुःख भोगेंगे।

तीसरी गाथा में बताया है कि ऐंड़ा (छिद्र) बना कर चोर धन लेने को गया किन्तु वहाँ पकड़ा जाने से भीतर और बाहर मालिक और साथी खेंचने लगे बिचारा चोर वहां ही बुरे हाल से मर गया। चौथी गाथा में बताया है कि दूसरोंके यानी कुनबा (कुटुम्ब) के लिये जो पाप करते हैं वे खाने में सब तय्यार हैं किन्तु उस की शिक्षा भोगने में कोई काम नहीं आता। पाँचवीं में बताया है कि धन देकर कोई रिशवत से छूटना चाहे वह भी दुर्गति से नहीं बच सक्ता रिशवत देने वाले को यहाँ पर भी ज्यादा शिक्षा होती है। छठी गाथा में बताया है कि एक २ क्षण भयंकर जाता है क्या मालूम कब मृत्यु होगी रात को अथवा दिन को पाप से डरो भारंड पक्षी माफिक सचेत रहो सातवीं, में बताया है कि एक पैर धरो वह भी देख के धरो सर्वत्र मायाजाल फंसाने को है और कुछ भी परमार्थ के लिये ही जीवित धारन करो देह पुष्ट करने को आहार नहीं लो, आठवीं गाथा में कहा है कि घोड़ा स्वच्छंद ही होवे तो आप और बैठने वाला दुःख

पावेगा इसलिये शिष्य अपने गुरु की आज्ञा में रहेगा तो गुरु शिष्य दोनों सुखी होंगे मोक्ष मिलावेंगे चाहे इतना बड़ा आयुष्य हो तो भी निरन्तर अप्रमादी हो कर चलो याने यह अध्ययन शिक्षा से ही भरा है।

इस अध्ययन की तेरह गाथायें मुँह पर कर के निरन्तर उस का अर्थ विचारने योग्य है संसार को असार मानने वाला बौद्ध धर्म उसी तत्व से भरा है।

पञ्चम अध्ययन।

अकाम सकाम मरणं

जैन में आत्मा अमर है तो भी नया शरीर मिलता है और पुराना शरीर नाश होता है वे संयोग वियोग को जन्ममरण कहते हैं वह सब जीवों को होता है जो मुक्तात्मा मोक्ष में हैं उन को जन्म मरण नहीं है न भविष्य में भी होंगे इसलिये उन की अपुनरावर्त्तन गति को मोक्ष कहते हैं और संसारी जीवों को जन्ममरण होता है वह जन्म से हर्ष और मरण से सर्वत्र खेद प्रकट होता है।

पंचम अध्ययन में वीर प्रभु कहते हैं कि मरण तो होगा किन्तु मरने के समय ज्ञानी पुरुष को खेद नहीं होता [समाधि

शतक ग्रंथ हिंदी पढ़ो) और वह अन्त समय पर सब जीवों की क्षमा चाह कर सव को क्षमा देकर आप शाँत वृत्ति से मृत्यु के वश होता है वह सकाम मरण है और वह पँडित मरण भी है किंतु मरने के समय अज्ञानी पुरुष हाय हाय करते हैं आप दुःख पाते हैं दूसरों को दुःखी करते हैं वो अकाम याने मूर्ख मरण हैं।

१ ली गाथा में यहही कहा है।

सँति मेय दुवे ठाणा, अक्खाया मारणंतिया
अकाम मरणँ चेव सकामं मरणँ तहा
बालाणँ अकामँतु मरणँअसई भवे
पँडियाणँ सकामन्तु उक्कोसेणँ सई भवे

दूसरी गाथा में कहा है कि मूर्खों का मरण अकाम मरण बहुत वक्त होता है पण्डितों का सकाम मरण तो एक ही दफा होता है क्यों कि ज्ञान से शरीर संपदा पुत्र सत्ता का मोह उस को होता ही नहीं है (पांच इंद्रियों के विषयों में गृद्ध पुरुष को मूर्ख बाल कहा है और इन्द्रियों को वश करने वाला पण्डित है और अल्प रागी को बाल पंडित कहा है)।

अन्त की गाथा में कहा है कि पँडित पुरुष मरण के

समय शरीरादि का मोह छोड़ना है इसलिए स्थूल शरीर तो सब जीव छोड़ते हैं किंतु पँडित पुरुष तो सूक्ष्म शरीर भी छोड़ता है जिस से नया स्थूल शरीर नहीं मिलता।

अहकालँमि सँपत्ते आघायांय समुस्सयँ
सकाम मरणँ मरई तिण्हं मन्नयर मुणि त्तिबेमि

पँडित पुरुष मरण आने पर स्थूल सूक्ष्म शरीर को निर्ममत्व से छोड़कर तीन प्रकार के मरण में से एक मरण से मरते हैं।

तीन मरण का स्वरूप।

(१) भक्त प्रत्याख्यान (२) इंगिनी (३) पादपोपगमन कोई भी जाति का आहार पानी मुँह में न डालना याने सिर्फ खाना पीना छोड़ शरीरादि से निर्ममत्व हो जाना वह भक्त प्रत्याख्यान मरण है (२) भोजन त्याग के साथ एक जगह मुकर्रर कर उससे बाहर जाना भी बंद करता है वो इंगिनी मरण है (३) पेड़ की माफिक स्थिर होजाना चाहे इतना कष्ट आवे तो सहन करना वह पादपोपगमन मरण है तीसरा सर्वोत्तम दूसरा मध्यम है इस अध्ययन में मुमुक्षों को बहुत सीखने का है।

क्षुल्लक अध्ययन ६

पँडित मरण विद्वान् साधु का होता है इसलिए विद्वान् साधु क्षुल्लक निग्रन्थ नाम से कहते हैं उस का कुछ वर्णन करते हैं।

जो अविद्या से अँधे हैं वे अनेक दुःख पाते हैं। वह पहली गाथा में कहा है।

जावँतिऽविज्जा पुरिसा सव्वे ते दुख संभवा।
लुप्पँति वहु सो मूढ़ा संसारँमि अणंतगे

गुरु के पास सद्ग्रहस्थ संसार का दुःख स्वरूप जान कर हृदय में सोचकर संसार से विरक्त होताहै उसको इस अध्ययन में वताया है कि आप सँसार के मोहक विषयों से फिर लिप्त न होवें न दुःख पावे' जैसे छोटा वच्चा लड्डूके लोभ की ख़ातिर घेना और जान गँवाता है ऐसे ही आप का हाल न होवे इस लिये अव विषयों में गृद्धन होना अन्त की २ गाथा में कहा है कि साधु किंचित् मात्र भी लोभ न करे न संचय करे केवल ग्रहस्थों को विना सताये अपना गुज़ारा कर लेवे।

सँनिहिंच न कुव्वेज्जा लेव मायाए संजए
पक्खी पत्तँ समादाय निरवेक्खो परिव्वए
एसणा समिओ लज्जू गामे अणियओ चरे
अपमत्तो पमत्ते हिं पिंडवायं गवेसए

वीर प्रभुने ऐसा वर्णन किया वह गद्यमें मागधी में लिखा है।

एलक अध्ययन—७

एलक नाम उन वाला दुम (भेड़) को कहतेहैं दुमको पुष्ट कर माँस भक्षक उस को मार कर खा जाते हैं इस तरह से इस दुनियां में जो इन्द्रियों को इच्छित स्वादकराकर शरीर को पुष्ट कर के कुछ परमार्थ नहीं करते उनकी एलक (भेड़) की माफिक दुर्दशा होती है ऐसा दृष्टाँत देकर वीतराग प्रभु शिष्यों को फरमाते हैं कि आप लोग शरीर को पुष्ट न करो न स्वाद की इच्छा करो किंतु काया से कुछ भी धर्म साधन तपस्या परमार्थ करो कि तुम्हारे को मरण की पीड़ा जावे न तुम्हारा कोई मृत्यु चाहे।

पहली गाथा से वह ही कहा है।

जहा एस समुद्दिस्स कोई पोसिज्ज एलयँ
ओयणँ जवसँदिज्जा पोसेज्जा विपयंगणे

फिर भेड़ के दृष्टांत से कहते हैं कि मूर्ख मनुष्य शरीर

पुष्ट करने में आनन्द मानते हैं किंतु अल्प स्वाद के कारण अनेक दुराचार सेवन कर बहुत दुःख पाते हैं अमूल्य नर जन्म हार जाते हैं जैसे हजार सुवर्ण महोर कोड़ी के खातिर हार जावें।

जहाकागिणीएहेऊँ सहस्सँहारएनरी
अपत्थं अंवगं भुञ्चारायरज्जं तुहारए

दूसरे दो पद यानी आधी गाथा में कहा है कि आम के स्वाद में राजा ने अति स्वाद से अति आम खाकर अतिसार का रोग पाकर बुरे हाल से मर कर राज और जीवन गँवाया इस तरह से सद्बुद्धि छोड़ कर कुकर्म करने वाले दुःख पाते हैं ऐसा कोई भी न करे इसलिए बहुत शिक्षा उस में भरी है अन्त की गाथा में वह ही कहा है कि—

तुलियाण वालभावं अवालं चेव पंडिए
चइऊण वालभावं अवालं सेवइ मुणि॥

तिवेमि। ३०॥

पण्डित पुरुष मूर्ख के सुख दुःख की तुलना कर मूर्खता और इन्द्रिय स्वाद छोड़ कर परमार्थ वृत्ति त्याग वृत्ति धारण कर मुनि स्व पर का हित करे।

कापिलिक अध्ययन ८

साधु होकर संसार में अनेक रमणता मिले तो भी उस में विष मिश्रित भोजन अनुसार दुःख जान कर उसका स्वादन करे किन्तु निरस विरस सूखा भोजन पर संतुष्ट होकर धर्म साधन करे स्त्रियों के लोभ में धन के लोभ में न पड़े न दुराचार को सेवे इसलिये कपिल मुनि के दृष्टांत से यहाँ शिक्षा दी है कि विद्या पढ़ने को माता से विमुख होकर विदेश में जाकर वहां दासी की पुत्री रूपवान देख कर उस पर मोहित होकर उस ने बहुत दुख पाया जैसे कि भारत-वर्ष के विद्यार्थी विलायत में अनाचार करते हैं दुख पाते हैं उन को इस अध्ययन से बहुत शिक्षा दी है कि तुम स्त्री के फन्दे में मत फसो न दुराचार करो न विद्याध्ययन छोड़ो सन्तोष वृत्ति रखो।

अधुवे असासयंमी संसारम्मि दुःखपउराए।
किं नाम होज्जतं कम्मयं जेणाहं दुग्गइंनगच्छेज्जा॥

कपिल मुनि यानी पूर्व कथित दासी रक्त और पीछे दुःख भोग कर जो विरक्त मुनि हुए वह कहते हैं कि दुःख भोग कर जीव सीधे मार्ग पर आता है किन्तु विना दुःख भोगे अपनी बुद्धि से सोचे कि इस अध्रुव अशास्वत

दुःख से भरा हुआ संसार में क्या कार्य मैं करूं कि जिस से मैं दुर्गति में न जाऊं न दुःख पाऊं ? मन्द बुद्धि वालों को उत्तर भी देते हैं।

विज्ञ हिंत्तु पुव्व संयोगं न सिणेहं कहिं विकुव्वेवज्जा
असिणेह सिणेहकरेहिं दोस पदोसेहिं मुच्चए भिक्खू ॥

संसार के सम्बन्धिओं का स्नेह छोड़ वीतराग होकर छोटे बड़े दुराचारों से दूर रहे।

ऐसा करने से मुनि दुःख नहीं पाता इस अध्ययन में जितने राग के कारण हैं जितने दुःख के कारण हैं सो बताये हैं वह समझ कर पंडित साधु दुःख नहीं पाता।

नमिराजर्षि अध्ययन ९

इस अध्ययन में नमि नाम का एक राजा ने पूर्व भव का ज्ञान हो जाने पर दीक्षा ली है इन्द्र ने उस की विरागता की परीक्षा की है और मुनि को राग-द्वेष कराने को ब्राह्मण रूप में आकर बहुत बात सुनाई है किन्तु राजर्षि बड़े दृढ़ और ज्ञानी होने से भृष्ट न हुए जिस से इन्द्र ने प्रशंसा कर प्रकट रूप में होकर नमस्कार किया!

चइ ऊण देव लोगाओ उववणोमाणु सम्मिलोग'मि ।
उवसंत मोहणिज्ञो सरई पोराणि यं'जाइ ॥

देवलोक (स्वर्ग) से मनुष्य लोक में नमिराजा आया और मोह शांत होने से जाति स्मरण ज्ञान हो जाने से पूर्व भव देखने लगा ।

जाइ सरित्तु भयवं सहसं'बुद्धो अणुत्तरे धम्मे ।
पुत्तं ठवित्तु रज्जे अभि निक्खमई नमी राया ॥

जाति स्मरण ज्ञान से पूर्व भवों का सुख देख कर चारित्र धर्म में रक्त होकर पण्डित नमिराजा पुत्र को गद्दी पर बैठा कर दीक्षा लेकर साधु हुआ राज्य सम्पदा छोड़ दी ।

अब्भुट्ठिय रायरिसिं पवज्जा ठाण मुत्तमं ।
सक्को माहण रूवेण इमं वयणमव्ववी ॥

नमिराजा को पूर्ण वैराग्य स्थान में बैठा देख कर इन्द्र ब्राह्मण रूप में आकर इस तरह से बोलने लगा-

एक ही गाथा यहां कहते हैं ।

अच्छे रग मब्भुए भोगे च यसि पत्थिवा ।
असन्ते कामे पत्थेसि सं'कप्पेण विहन्नसि ॥

हे राजन् ! मेरे को आश्चर्य होता है कि यहां पर मनो-

इर सुखं भोग जो साक्षात् है वह छोड़ कर अविद्यमान [अप्रत्यक्ष] स्वर्ग के सुख को चाह कर नाहक दुःख पाता है वो ठीक नहीं है ।

नमिराजर्षि ने कहा-

सल्लंकामा विसंकामा कामा आसी विसोपमा ।
कामे पत्थे माणा (मूढ़ा ?) आकामाजंति दुग्गइं ॥

हे भूदेव ! मैं भोग काम नहीं चाहता शल्य समान सर्प समान वे दुःख दायी हैं मूढ़ पुरुष काम [भोग] सुखकी चाहना कर अतृप्ति से दुःखी होकर दुर्गति में जाते हैं।

ऐसे अनेक शिक्षा वचन सुन कर इन्द्र प्रकट होकर प्रशंसा करने लगा ।

अहोते निज्जिओ कोहो अहोते माणो पराजिओ ।
अहोते निरक्किया माया, अहोते लोभोवसीकओ ॥
अहोते अज्जवं साहू अहोते साहु मद्दवं ।
अहोते उत्तमा खंती अहाते मुत्तिउत्तमा, ॥

साधु गुणों की प्रशंसा कर फिर कहता है कि—

इहंसि उत्तमा भंते पेच्चो होहिसि उत्तमो ।
लोगुत्त मुत्तमं ठाणं सिद्धिगच्छसि निरओ ॥

यहां पर आप उत्तम पदवी पर हैं परलोक में भी

उत्तम होंगे और संसार से सर्वथा मुक्त हो कर सर्वोत्तम मुक्ति पद पाओगे अन्त में वीरप्रभु शिष्यों को कहते हैं कि--

एवम् करंति सम्बुद्धा पण्डियापवियक्खणा
विणियट्टन्ति भोगेसु जहासे नमिरायरिसित्तिवेमि ॥

इस तरह से पण्डित प्रज्ञ ज्ञाततत्व पुरुष भोगों से विरक्त नमी राजर्षि अनुसार होकर सुख पाते हैं--

द्रुमपत्र अध्ययन

प्रमाद छोड़ो--

वीरप्रभु अपना मुख्य शिष्य इन्द्रभूति गौतम से आमन्त्रण कर सब शिष्यों को शिक्षा करते हैं--

दुम पत्तए पन्डुयए जहा निवडइराइगणाण अच्चए ।
एवं मणुयाण जीवियं समयं गोयम मापमाए ?

हे गौतम ? एक क्षण भर भी प्रमाद न करो क्योंकि सूखा पेड़ का पत्ता गिरने में क्या देर लगती है और जैसे रात को ताराओं का समुदाय|अस्थिर है ऐसे ही जीवित अस्थिर है ऐसे अनेक क्षण भंगुर वस्तुओं के दृष्टांत से अप्रमादी होकर परमार्थ साधन का इस अध्ययन में

उपदेश है और वह सुनकर गौतम स्वामी वगैरह अनेक शिष्य मोक्ष के भागी हुए हैं--

यह अन्त की गाथा है।

बुद्धस्स निसम्मभासियं सुकहियमट्ठपओवसोहियं
रागदोसं च छिंदिया सिद्धिं गइगए गोयमत्तिवेमि ३७

वीरप्रभु का कहा हुआ दृष्टांत से शोभित तत्व को समझ कर राग द्वेष छोड़कर गौतम स्वामी मोक्ष में गये हमारे और बन्धु भी इस अध्ययन सुनकर प्रमाद छोड़ेंगे-

बहु श्रुत अध्ययन ११

अप्रमादी पुरुष रात दिन गुरु सेवा कर तत्व ग्रंथ पढ़ कर बहु श्रुत याने पंडित होता है किन्तु पंडित के और भी लक्षण अच्छे होने चाहिए इस लिए अपंडित और पण्डित के लक्षण कहते हैं।

(१) स्तब्धो मान से भरा हुआ, (२) लुब्धो रस स्वाद (३) इंद्रिय परवश (दुराचारी) (४) बिना विचारे बार २ बोलने वाला वो अविनीत मूर्ख है चाहे वह पढ़ा भी हो वा न भी पढ़ा हो वो दूसरी गाथा में बताया है।

जे या विहोइ निविज्जे थद्धे लुद्धे अनिग्गहे
अभिक्खणं उवल्लवइ अविणीए अ बहुस्सुए २

और तीसरी गाथा में वताया है कि पांच विद्या पढ़ने में विघ्न है।

(१) अहपंच हिंठाणहिं जेहि सिक्खा न लब्भई (२)
(३) थंभा कोहा पमाएणं (४) रोगेणा लस्सएणय

अहंकार क्रोध प्रमाद रोग आलस्य जिस में है वह विद्या नहीं पढ़ सक्ता।

आठ गुण वालो विद्या पढ़ सक्ता है—

अह अठ हिठाणेहिं सिक्खा। सीलेत्तिवुच्चई
अह सिरे सयादंते नयमम उदाहरे (४)
नासीली न विसीले न सीया अईलोलुए अकोहणे सच्चरए
सिक्खा सीलेत्ति वुच्चइ [५]

(१) हांसीरहित (२) दांत (३) अमर्म भाषी (४) दुराचार रहित (५) अत्याचार रहित (६) अस्वाद (७) अक्रोधी (८) सत्य भाषा आठ गुण धारण करने वाला विद्या पढ़े इस दो गाथा से पढ़ने वालों को ऐसे गुण धारण करना चाहिए।

विद्या से भूषित सदाचार से सुशोभित आचार्य किं वा मुनि चक्रवर्ती वासुदेव महाराजा वगैरह से भी अधिक माननीय होता है वह सब इस अध्ययन में वताया है और चन्द्र सूर्य महासागर वगैरह अनेक उपमायें उस को

घटती हैं वह सब पढ़ने योग्य हैं अन्त में वहु श्रुत नीत राग हो कर मुक्ति में जाता है वह भी वताते हैं।

तम्हा सुयमहिठ्ठेजा उत्तमठ्ठगवेसए
जेणप्पाण परंचेव सिद्धिं सपाउणेज्जासे तिवेमि ३२

इसलिए वह सूत्र पढ़ कर उत्तम तत्व (मोक्ष) का चाहक वहु श्रुत से अपने को और श्रोताओं को अच्छा बोध द्वारा मुक्ति पहुंचा सक्ता है।

हरि केस वल अध्ययन—

तपश्चर्या का महिमा—

सो वाग कुल संभूओ गुणुत्तर धरोमुणी
हरि एस वलो नाम, आसीभिक्खू जिइंदियो १

चांडाल कुल में उत्पन्न (नीच जाति) किंतु उत्तम गुणों का धारक हरि केस वल मुनि जितेन्द्रिय हुआ उस के उत्तम गुणों से एक देव उस का सेवक हो कर उस की सेवा और महिमा करता था और जो कोई इस मुनि का अपमान करता तो वह देव उस को शिक्षा करता था इस लिए सर्वत्र पूजा जाता था तो भी स्त्री संपदा धन राज्य सत्ता में लिप्त न हुए न अहंकार किया न किसी पर क्रोध किया न द्वेष किया तो आप मुक्ति में गये यहाँ पर यह शिक्षा है कि जगत् में जो पूजा वा

पूज्य पद है वो केवल उत्तम गुण है न जाति है न उम्र है न आडम्बर है।

एयं सिणाण कुसलेहिं
दिट्ठं महासिणाण इसिणं पसत्थं
जहिंसिन्हाया विमला विसुद्धा
महारिसी उत्तमठाण पत्ते त्तिबेमि ४७

सदाचार परमार्थ वृत्ति क्षमादि गुणों से अलंकृत होना वह मुनियों का प्रशस्त स्नान वीतराग प्रभु ने कहा है उन गुणों में जो स्नान कर विमल विशुद्ध याने स्वपर उपकारी हुए हैं वे महर्षि मुक्ति को प्राप्त हुए हैं ग्रहस्थों को भी जाति अहंकार छोड़ कर सद्गुण धारण करने का यहां उपदेश है।

चित्र सम्भूति अध्ययन १३

सँसार में अनेक रमणीय वस्तु है मुमुक्षुओं को उस में प्रेम नहीं रखना चाहिए क्योंकि इंद्रियों के वश होने वाला पुरुष अनेक अनर्थ करता है चित्र संभूति दोनों भाइयों ने दीक्षा ली परंतु चक्रवर्ती राजा की पट्टराणी जो स्त्री रत्न थी उस ने सँभूति मुनि को नमस्कार किया प्रमाद से मस्तक के वालों का कोमल स्पर्श से सम्भूति मुनि वैराग्य भाव को भूल कर वासना चित्त में रखी कि

मेरे को ऐसा रत्न दूसरे भव में मिले जो कि चारित्र से सब वस्तु मिलती है परन्तु साधु को उस की वासना नहीं होनी चाहिए क्योंकि वो वासना से बद्ध हो कर सिर्फ उतना ही पा कर मुक्ति नहीं पा सकता देव लोग में वह गया और चक्रवर्ती ब्रह्मदत्त नाम से प्रसिद्ध हुआ। चित्र मुनि वासना रहित हो कर देव लोक में जा कर श्रेष्ठि के पुत्र हुए और साधु पास धर्म सुनने से दीक्षा ले कर फिरने लगे।

दोनों कांपिल्य पुर नगर में मिले ब्रह्मदत्त को पूर्व भवका ज्ञान होने से उस को भाई जान कर राज्य देता था और ज्ञान से मुनिराज राज्य को सँसार बन्धन जान उस को दीक्षा लेने को कहते थे मनोहर भोग की अधिक प्रशंसा ब्रह्मदत्त चक्रवर्ती ने की और कहा कि युवावस्था में थोड़ा तो सुखास्वाद में मेरे पास से विनाश्रम आप को चाहे सो दे सक्ता हूं मुनि ने कहा भो बँधो! मैं ने पिता के घर में सब सुख देखा है मैं पहिले ही भिक्षुक न था किंतु सुन।

सव्वं विलवियं गीयं सव्वं नट्टं विडंबियं
सवे आभरणा भारा सव्वेकामादुहावहा १६

गीत मेरे को मरण के रोने समान है नाटक विडंबना रूप है आभूषण बोझा रूप है विलास दुःखों की जड़

है ऐसे अनेक प्रकार से समझाने पर भी वासना वाले राजा ने राज्य न छोड़ा मर के नर्क में गया मुनिराज धर्म साधन कर सद्गति में गये। वैराग्य रस से भरपूर अनेक दृष्टान्त वोध रूप इस अध्ययन में हैं जो पैसा के लिए अनेक पाप करते हैं श्रीमानों के लड़के अनाचार दुराचार कुलटावा रंडियों के साथ करते हैं उन को यह अध्ययन पढ़ना चाहिए और इन्द्रियों को वश में रखना चाहिए।

इषुकारी अध्ययन १४

इस अध्ययन में एक सुशीला कमला रानी ने अपने पति को किस तरह से और क्यों समझाया और रानी को वराग कहाँ से हुआ वह सब अधिकार हैं भव्यात्माओं को ऐसा मालूम होवेगा कि पूर्व में राजा रानी पुरोहित उस की पत्नी और उन के बच्चे तक कैसे सुशील थे और अपनी भूल मालूम पड़ने पर कैसे समझ जाते थे वह सब इस अध्ययन से मालूम होता है।

इषुकार राजा कमलावती रानी भृगु पुरोहित उसकी भार्या यसा और दो उनके पुत्र ऐसे छः जीव स्वर्ग में से आ कर अपने कर्मों के अनुसार इषुकार नाम के पुराने नगर में उत्पन्न हुवे और दो द्विज पुत्रों ने प्रथम कोमल अवस्था में साधु के पास संसार का स्वरूप दुःख देने

के पास साधु होने की आज्ञा मांगी बाप और माता ने बच्चों की बात सुनकर खेद लाकर कहा कि हे पुत्रो ! आप को किसी धूर्त ने वहकाया है साधु होना तो जिस को घर में खाने को न हो वही होता है और घर घर मुफ्त का मांग कर जिंदगी वरवाद करना है अपने घर में धन का टोटा नहीं है न खाने का दुःख है न कमाने की चिंता है न राज का भय है आप सुख से विद्या पढ़ो और वड़े होने पर संसार के सुख भोगो, ऐसा कहा तो भी वच्चों ने सँसार में रहने की इच्छा न की तो फिर समझाने लगे कि हे वेटे ! साधुपने में वहुत दुःख है लोग खाने को नहीं देंगे कटु वचन कहेंगे कपड़ा फटा मिलेगा नहीं भी देंगे जङ्गल में वा दुःख देने वाली जगह में सँतोष मानना पड़ेगा कोई चोर जान कर क़ैद में डालेंगे कोई मलीन वेष देख कर हाँसी करेंगे तो साधुपना तुम्हारे लिए अच्छा नहीं है फिर भी वच्चे साधुपने की इच्छा वताने लगे तो वाप और मा ने अपने घर में कितना सुख है कितनी ऋद्धि है राजा का कितना सन्मान है वह वताया तो भी जिस के हृदय में रोम रोम वैराग्य हो रहा था वह कैसे मान सक्ता है ? दोनों वच्चों का दृढ़ वैराग्य देख कर माता पिता ने दीक्षा लेने का विचार किया

घर के चारों ही मनुष्य ने दीक्षा का भाव वताया और घर में कोई धनरक्षक न रहने से राजा ने वह धन अपने सिपाही भेज कर राज्य भांडागार में मंगाना शुरू किया सैकड़ों गाड़ी में असवाव धन रोकड़ आती देख कर रानी जो गोख में वैठी थी वह महल से देख कर पूछने लगी कि इतना धन वगैरह कहां से आता है ?. उसका सच्चा अधिकार मालूम होने पर रानी को वैराग्य आया राजा को समझाया कि अपने पुरोहित को धन पूर्व में देकर उस को वैराग्य होने पर आपने फिर ले लिया वह वहुत वुरा किया राजा भी समझ गया कि त्यक्त आहार सिर्फ कुत्ता ही खाता है ऐसा विचार कर रानी के साथ दीक्षा ली छै आदमी सच्चा वैराग से रँगीत थें तो अच्छी तरह से साधु वृत्ति पाल कर मोक्ष में गयें वह गाथा ५३ में अंत में लिखा है ।

राया सह देवीए माहणोय पुरोहिओ
माहणीद्वारगा चेव सव्वेतेपरिनिव्वुडेत्तिवेमि

भिक्षु अध्ययन १५

भिक्षा से निर्वाह करने वाले भिक्षु कहलाते हैं उन को अपनी वृत्ति कैसी रखनी चाहिए वह इस अध्ययन

में बताया है लाखों की संख्या में भिक्षु फिर कर देश को निर्धन बना रहे हैं आप अपमान पाते हैं दूसरों को सताते हैं उन भिक्षुकों को और उन को दान देने वाले पोषक अंध श्रद्धा वाले गृहस्थों को इस अध्ययन से बोध मिलेगा कि ऐसे गुण धारक भिक्षुक को ही दान और उत्तेजन देना चाहिए और ऐसे गुण भिक्षुकों को अवश्य प्राप्त करना चाहिए तो देश का धन बढ़ेगा और साधु की प्रतिष्ठा बढ़ेगी।

में मौन धारण कर चलूंगा यानी विना प्रयोजन न बोलूंगा न किसी को सताऊंगा न दूसरों के पास धन लऊंगा न गृहस्थों की माफ़िक ऐश आराम चाहूंगा न स्त्री का सम्बन्ध करूंगा न क्रोध करूंगा न अहंकार करूंगा न वासना रखूंगा डाँस मच्छर का उपद्रव वा ठंड ताप किंवा कुछ भी कष्ट आने पर धैर्यता न छोडूंगा इंद्री कब्ज़े में रखूंगा आत्मा से अलग जो शरीर है उस का मोह छोड़ कर सच्चिदानन्द ब्रह्म में आनंद प्राप्त करूंगा ऐसी अनेक शिक्षायें उस में है ऐसी शिक्षा याद कर साधु निःस्पृही होने पर ही लोग उस को परम पूज्य महर्षि मानेंगे और संसार में सच्चा भिक्षु कहलावेगा।

असिप्प जीवीअ गिहे अमित्ते
जिइंदिए सव्वओविप्पमुक्के
अणुकसाई लहु अप्पभक्खी
चिच्चागिहं एगचरे स भिक्खु १६
त्तिबेमि.

सांसारिक शिल्पविद्या पढ़ा होवे तो भी उस से जीवन न करे न घर पैसा रखे न शत्रु मित्र भाव रखे क्रोधादि त्यागे लोभ न करे मिताहार करे जो साधु होवे तो ऐसा ही होवे।

ब्रह्मचर्य अध्ययन १६

सव जीव समाधि चाहते हैं किंतु समाधि प्राप्त करने का प्रवर्त्तन उत्तम रखना चाहिए वो इस अध्ययन में वताया है कि साधुओं को ब्रह्मचर्य अच्छी तरह से पालना चाहिए ब्रह्मचर्य पालने से समाधि मिलेगी।

दश समाधिस्थान

(१) स्त्री नपुंसक और पशुओं के स्थान से अलग अपना निवास करे यानी रात को वा दिन में एकांत में

उन का सहवास न करे जिस से कुवासना न होवे न लोक निंदा होवे ।

(२) न स्त्रियों के विषय सुख सम्बन्ध की कथा करे।

(३) न स्त्रियों के साथ एक आसन पर बैठे न स्त्री के बैठने के आसन पर बैठे ।

(४) स्त्रियों के मनोहर अङ्ग के भाग (स्तन पेट मुख इत्यादि) देखने की चेष्टा न करे ।

(५) न स्त्रियों के विलासभवन के नज़दीक के कमरे में सोवे ।

(६) साधु होने से पहले जो विलास संसार में किये थे वे याद न करे ।

(७) दूध घी मसाले इत्यादि पुष्ट पदार्थ का अधिक वारंवार सेवन न करे ।

(८) अधिक आहार न करे ।

[९] शरीर का सुंदर देखाव न करे ।

(१०) न गृहस्थों की तरह पांचों इन्द्रियों का सुख चाहे इतना करने वाला पहले दुःखी होगा और स्त्रियों का सहवास छोड़ेगा और इन्द्रिय दमन करेगा तो समाधि मिलेगी ।

ब्रह्मचारियों को यह अध्ययन

पढ़ना चाहिए एक ब्रह्मचर्य अच्छा होने से सब गुण प्राप्त हो जाते हैं रोग शोक भय आदि सब दूर होते हैं और एक समय भी दुराचार की वासना करेगा तो अंत दुःख पावेगा समाधि का लेश भी न रहेगा न मुक्ति मिलेगी। अंत की गाथा में कहा है किः—

एस धम्मे धुवे नियए, सासए जिणदेसिए
सिद्धा सिज्झंति चाणेण, सिज्झिसंतितहावरे १७

वीतराग का कहा हुआ साधु धर्म शाश्वत निरंतर निश्चल पाकर (ब्रह्मचारी रहकर) मुक्ति में गये और भविष्य में जावेंगे इसलिए ब्रह्मचर्य अच्छी तरह से पालना चाहिए।

पापश्रमणीयँ अध्ययन १७

जो साधु होकर साधुता न रक्खे बोझरूप होवे उसको पापश्रमण कहते हैं व पापश्रमण के लक्षण इस अध्ययन में बतावेंगे दीक्षा लेने के पश्चात् साधु गुरु की आज्ञा न माने और गृहस्थों का माल फुकट का खाकर सो रहे

और हित शिक्षा देने पर लड़ने को तैयार होवे स्वाद के लिए खाने का पदार्थ जीवों को दुःख देकर प्राप्त करे। पाँच समिति तीन गुप्ति का पालन न करे साधु का जो आचार बताया है वह पालन न करे क्लेश करे, क्रोध करे, गर्व करे, कपट करे, लोभ रक्खे, मूर्च्छा रक्खे, आसन स्थिर न रक्खे, तपश्चर्या न करे, दूधमसाला पुष्ट पदार्थ अधिक खावे, सूर्य अस्त होने के समय पर भोजन करे, सद्गुरु के कटे शत्रु का वा निंदक का सम्वन्ध रक्खे एक समुदाय छोड़ दूसरे समुदाय में चला जावे, ज्योतिप वता कर पेट भरे, ऐसे दुर्गुण सेवने वाला पाप श्रमण इस लोक में दुःख पाता है परलोक में भी दुर्गति मिलती है इस लिये मुमुक्षुओं को दुराचार छोड़ना चाहिये। जो पाप श्रमण के लक्षण जान कर दुराचार छोड़ेंगे तो सुख पावेंगे, वह अन्त की गाथा में वताया है:—

जे वज्जए एए सयाउदोसे
से सुव्वए होइ मुणीण मज्झे
अयंसिलोए अमयंव पूइए
आराहए लोग मिणं तहा परे त्तिवेमिः

संयतीय अध्ययन १९

संयति राजा का पिल्यपुर नगर में राज्य करता था वो एक दिन शिकार खेलने को जँगल में गया, साथ में गाड़ी घोड़ा हाथी का परिवार था वो राजा ने जब पेड़ों की घटा में एक तेजस्वी मुनि को देखा तो सब बात को भूल गया और मुनि के पास जाकर बोलने लगा हे भगवन्! मेरे आने से आप को कुछ तकलीफ़ तो नहीं हुई और जो कुछ हुई हो तो मेरे पर क्रोध न करना क्योंकि आप तो तप के तेज से करोड़ों आदमी को जला सक्ते हो मेरे पर क्षमा करो मैं संयति नाम का राजा हूँ मुनिने शांत मुद्रा धारण कर राजा को कहा, हे राजन्! जैसे तू दुःख से डरता है ऐसे सब प्राणी दुःख से डरते हैं इस लिये जीवों की हिंसा करनी छोड़दे और औरत, राज्य, पुत्र वगैरह का ममत्व छोड़ दे उस समय मुनिराज के वचनों से वैराग्य आया और दीक्षा ली और गर्दभाली मुनिराज का शिष्य हुआ पीछे बहुत सिद्धाँत पढ़ कर अकेले विचरने लगे एक समय पर क्षत्रिय मुनि जो देवलोक में से आकर मनुष्य हुये थे और पूर्व भव का ज्ञान था वह दीक्षा लेकर फिरते थे उनके साथ संयति मुनि का समागम हुआ संयति मुनि पर धर्मराग हो जाने से वैराग्य